Course – BA Education Hons, Part II
Paper – III, Educational Psychology & Pedagogy
Topic – Individual Difference
Prepared by – Dr Sangeeta Kumari

इकाई 3 : वैयक्तिक भिन्नता
Unit 3 : INDIVIDUAL DIFFERENCE

3.1 वैयक्तिक विभिन्नता की संकल्पना (Concept of Individual Difference)

हर व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक शीलगुणों में दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होता है। शारीरिक संरचना, रंगरूप, कद आदि गुणों को शारीरिक शीलगुण कहते हैं जिन्हें हम खुली नजरों से देख सकते हैं। दूसरी ओर बौद्धिक योग्यता, अभिरुचि, मनोवृत्ति, रुझान, उपलब्धि, आकांक्षा आदि गुणों को मानसिक शीलगुण कहते हैं, जिन्हें हम खुली नजरों से नहीं देख सकते हैं। इनका ज्ञान व्यक्ति की कार्यकुशलता, व्यवसाय चयन, आदि के आधार पर अप्रत्यक्ष रूप से होता है। "वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य व्यक्ति के विशिष्ट लक्षणों से है, जो उसे दूसरे व्यक्तियों से भिन्न बना देते हैं।

वैयक्तिक भिन्नता को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है (i) समूह के अन्दर भिन्नताएँ तथा (ii) व्यक्ति के अन्दर भिन्नताएँ। समूह के किसी भी दो व्यक्तियों में ये शीलगुण हर प्रकार से समान नहीं होते हैं। दूसरी ओर एक व्यक्ति के ही सभी शीलगुणों की मात्रा बराबर नहीं होती है।

3.2 वैयक्तिक भिन्नता की विशेषताएँ या स्वरूप (Characteristics or Nature of Individual Difference)

वैयक्तिक भिन्नता के निम्नलिखित स्वरूप हैं-

(i) विभिन्नता (Variability):-

विभिन्नता का अर्थ यह है कि समूह के सभी व्यक्तियों के शारीरिक तथा मानसिक शीलगुणों में मात्रा का अन्तर होता है। कोई भी शीलगुण या योग्यता किसी भी दो व्यक्तियों में समान मात्रा में नहीं पायी जाती है (जुड़वाँ बच्चे को छोड़कर)

Scanned with CamScanner

(ii) विकास की भेदीय दर (Differential rate of growth)

व्यक्ति के शारीरिक विकास तथा परिपक्वता की मात्रा में भी वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। शारीरिक विकास का प्रारंभ न तो सभी व्यक्तियों में एक ही साथ होता है और न समान रूप से जारी रहता है।

(iii) सीखने की भेदीय दर (Differential rate of learning):-

शारीरिक विकास की भेदीय मात्रा तथा विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के कारण बालकों के सीखने की मात्रा में भी भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

(iv) सामान्यता (Normality)

सामान्यता का अर्थ यह है कि किसी भी समूह के बहुत थोड़े लोगों में कोई योग्यता या शीलगुण बहुत अधिक या बहुत कम मात्रा में होता है और अधिकांश लोगों में यह शीलगुण लगभग समान मात्रा में ही होता है।

(v) शीलगुणों के परस्पर सम्बन्ध (Interrelationship of traits)

वैयक्तिक भिन्नता की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि व्यक्ति के अपने विभिन्न शीलगुणों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जिस बालक की बुद्धि तीव्र होती है उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है और जिस बालक की बुद्धि मन्द होती है उसकी उपलब्धि भी अपेक्षाकृत कम होती है।

(vi) वंश परम्परा तथा वातावरण का प्रभाव (Effect of heredity and environment)

वैयक्तिक भिन्नता का आधार वंशपरम्परा तथा दूसरा आधार वातावरण है। बालकों में कुछ शीलगुण अर्जित होते हैं तथा कुछ शीलगुण जन्मजात होते हैं, जिनके कारण उनमें वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न हो जाती है।

(vii) अन्तर्वैयक्तिक भिन्नता (Inter-individual difference)

वैयक्तिक भिन्नता की एक विशेषता यह है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से एक ही योग्यता या शीलगुण में भिन्न होता है।

(viii) अन्तःवैयक्तिक भिन्नता (Intraindividual difference):-

वैयक्तिक भिन्नता की एक विशेषता

Scanned with CamScanner

यह है कि एक ही व्यक्ति अपने दो योग्यताओं या शीलगुणों में भिन्न हो सकता है।

(ix) धारणा की भेदीय दर (Differential rate of retention):-

वैयक्तिक भिन्नता की एक विशेषता धारणा की भेदीय दर है। एक विषय को एक ही तरह के तथा एक ही समय तक दो व्यक्तियों के सीखने पर भी दोनों में धारण की दर अलग-अलग होती है।

3.3 वैयक्तिक भिन्नता के कारण (Causes of Individual Differences)

वैयक्तिक भिन्नता के निम्नलिखित कारण हैं:—

(i) वंशपरम्परा (Heredity)

वैयक्तिक भिन्नता का एक प्रधान कारण वंशपरम्परा है।

(ii) वातावरण (Environment):-

वैयक्तिक भिन्नता का दूसरा प्रधान कारण वातावरण है। वंशपरम्परा समान रहने पर भी वातावरण के कारण एक ही माता-पिता के बच्चों के व्यक्तित्व में विभिन्न प्रकार के शीलगुण विकसित हो जाते हैं।

(iii) प्रजाति तथा राष्ट्रीयता (Race & Nationality)

वैयक्तिक भिन्नता पर प्रजाति तथा राष्ट्रीयता का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। विभिन्न प्रजातियों के बालकों के शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक आदि शीलगुणों में भिन्नताएँ पायी जाती हैं।

(iv) आयु (Age):-

वैयक्तिक भिन्नता पर आयु का भी प्रभाव पड़ता है। आयु वृद्धि के साथ-साथ बालकों की शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता में भी वृद्धि पायी जाती है। फलतः बालकों की ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा मानसिक क्षमताओं में भी वृद्धि आयु वृद्धि के साथ-साथ होती रहती है।

(v) स्वास्थ्य (Health):-

स्वास्थ्य को भी वैयक्तिक भिन्नता का कारण माना जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है

Scanned with CamScanner

कि समान आयु होने पर भी स्वस्थ बालकों में अस्वस्थ बालकों की अपेक्षा शारीरिक तथा मानसिक क्षमताएँ अधिक विकसित होती है।

(vi) यौन (Sex) :-

यौन भिन्नता का प्रभाव भी वैयक्तिक भिन्नता पर पड़ता है। यौन भिन्नता के कारण ही लड़कों में श्रेष्ठता का भाव तथा लड़कियों में हीनता का भाव विकसित हो जाता है।

(vii) परिपक्वता (Maturation) :-

वैयक्तिक भिन्नता के कारणों में एक कारण परिपक्वता है। जैसे:- शारीरिक परिपक्वता, बौद्धिक परिपक्वता, यौन परिपक्वता, इत्यादि

(viii) बुद्धि (Intelligence) :-

वैयक्तिक भिन्नता का एक आधार बुद्धि या बौद्धिक स्तर है। जो बालक तीव्र बुद्धि के होते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि समान आयु के मन्द बुद्धि अथवा औसत बुद्धि के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक होती है।

(ix) आवश्यकता (Need) :-

बालकों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के कारण भी उनके व्यवहार प्रतिरूपों में अन्तर देखा जाता है। शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन विषय के चयन, व्यवसाय के चयन आदि में वैयक्तिक भिन्नता का एक मुख्य कारण आवश्यकता की विविधता है।

(x) संस्कृति (Culture) :-

वैयक्तिक भिन्नता का एक मुख्य कारण संस्कृति है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण व्यक्तित्व शीलगुणों में भिन्नता उत्पन्न हो जाती है। इसी तरह सांस्कृतिक भिन्नता के कारण समान आयु के होने पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बच्चों के व्यवहार प्रतिरूपों में गुणात्मक तथा मात्रात्मक भिन्नताएँ पायी जाती हैं।

3.4 वैयक्तिक भिन्नता और शिक्षा (Individual Difference and Education)

शिक्षा की एक महत्वपूर्ण समस्या बालकों की वैयक्तिक भिन्नता है। बालकों की बुद्धि, रुझान, उपलब्धि, आकांक्षा आदि में वैयक्तिक भिन्नता होती है। अतः एक ही तरह की शिक्षा, एक ही तरह की शिक्षा-प्रणाली

Scanned with CamScanner

सभी बालकों के लिए समुचित नहीं हो सकती है। शिक्षा का उद्देश्य है बालकों में निहित वैयक्तिक क्षमताओं के सहज विकास में सहायता करना है, जो परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से संभव नहीं है। प्रायः स्कूलों में सभी बालकों के लिए एक ही तरह की शिक्षा व्यवस्था होती है। अतः शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के समक्ष यह समस्या उपस्थित होती है कि बालकों की वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए उनकी शिक्षा की कैसी व्यवस्था की जाए जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। इसके लिए शिक्षा के निम्नलिखित आधार तत्वों की उचित व्यवस्था आवश्यक है:→

(i) समूहीकरण (Grouping):-

स्कूलों में छात्रों को कई समूहों या वर्गों में विभाजित करके उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। समूहीकरण के कई आधार होते हैं। प्राचीन काल में बालकों की वास्तविक आयु को ही समूहीकरण का आधार माना गया था परन्तु बुद्धि-परीक्षणों के विकसित हो जाने के बाद बुद्धि-लब्धि को समूहीकरण का आधार माना गया। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने समरूप समूहीकरण पर अधिक बल दिया और बतलाया कि बालकों का समूहीकरण उनकी मानसिक योग्यता के अनुकूल होना चाहिए।

(ii) पाठ्यक्रम (curriculum):-

वैयक्तिक भिन्नता की दृष्टिकोण से सभी बालकों के लिए एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम उपयुक्त नहीं होता है। इसीलिए, विभिन्न समूहों के बालकों के लिए अलग-अलग अनुकूल पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है।

(iii) अध्यापन विधियाँ (Methods of teaching)

पाठ्यक्रम की तरह अध्यापन विधियों का चयन भी वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर होना चाहिए। कारण यह है कि भिन्न-भिन्न श्रेणियों के बालकों के लिए एक ही प्रकार की अध्यापन विधि उपयुक्त नहीं होती है।

(iv) शारीरिक भिन्नता (Physical difference):-

वर्ग में उपस्थित बालकों में शारीरिक भिन्नता भी पायी जाती है। कुछ बालक लम्बे कद के होते हैं और कुछ बालक नाटे कद के होते हैं। इसी प्रकार कुछ बालक कम सुनते हैं तथा कुछ बालक नाटे होते हैं। तो ऐसे बालकों के लिए शिक्षक को चाहिए कि उन्हें आगे बैठने की व्यवस्था करे।

Scanned with CamScanner

(v) गृह कार्य (Home task)

वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन से शिक्षकों को अपने शिक्षार्थियों को गृह कार्य देने में सुविधा होती है। जिन बालकों में बौद्धिक योग्यता कम होती है, उन्हें अधिक सरल कार्य दिया जाता है तथा जिन बालकों में बौद्धिक योग्यता अधिक होती है, उन्हें अधिक कठिन कार्य दिया जाता है।

(vi) विशिष्ट एजेंसी (special agencies):-

बालकों की शैक्षिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन सम्बन्धी कुछ समस्या इतनी गम्भीर होती है जिनके लिए विशिष्ट एजेन्सी जैसे बाल-निर्देशन निदान गृह की व्यवस्था की जाती है

(vii) शैक्षिक निर्देशन (Educational guidance):-

वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन से शिक्षकों को यह सुविधा होती है कि बालकों की उनकी बौद्धिक योग्यता, अभिरुचि, आवश्यकता सामाजिक आर्थिक स्थिति को अनुकूल शिक्षा की सलाह देते हैं।

(viii) व्यावसायिक निर्देशन (Vocational guidance):-

वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को उनकी बुद्धि, अभिरुचि, चालुस्वभाव आदि के अनुकूल सलाह देने में सक्षम होते हैं। इस आधार पर वे व्यावसायिक समायोजन स्थापित कर पाते हैं।

(ix) अलाभान्वित बच्चों की शिक्षा (Education of disadvantaged children)

वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन से शिक्षकों तथा अधिकारियों को अलाभान्वित बच्चों को शिक्षा तथा उनके समायोजन की व्यवस्था करने में मदद मिलती है।

3.5 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Define Individual difference. Describe the characteristics or nature of Individual difference.
वैयक्तिक भिन्नता को परिभाषित कीजिए। वैयक्तिक भिन्नता के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Q2. Describe the causes of Individual difference.
वैयक्तिक भिन्नता के कारणों का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner